पर्यावरणीय प्रदूषण

Environmental Pollution & Sustainable Development

प्रदूषण को हमारे स्थल और जल के भौतिक, रासायनिक अथवा जैविक गुणों में ऐसे वांछित परिवर्तन के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जो हमारे कच्चे माल (raw material) के स्रोतों को क्षतिग्रस्त अथवा नष्ट करता है। अथवा कर देगा (उड्म 1971)। कोई भी कारक जो प्रदूषण को करता है वह प्रदूषक (pollutant) कहलाता है। यह वह तत्व है जो गलत मात्रा में, गलत स्थान पर अथवा गलत समय पर रहता है। कोई पदार्थ जो अल्प मात्रा में उपयोगी होता है वहीं अधिक सान्द्रता हो जाने पर प्रदूषक बन जाता है। जैसे (NO_3) तथा (PO_4)। प्रदूषक कोई पदार्थ, धुँआ, रसायन, जीव अथवा गुण, ताप, शोर हो सकता है। सभी प्रदूषकों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है जैसे प्राथमिक तथा द्वितीय प्रदूषक। प्राथमिक प्रदूषक वायु प्रदूषकों तथा अन्य वायुमण्डलीय घटकों के बीच रासायनिक अभिक्रिया के दौरान बनते हैं। प्रदूषक उन पदार्थों के अवशेष होते हैं जिन्हें हम उपयोग करके फेंक देते हैं। प्रदूषण सिर्फ इसलिए नहीं बढ़ रहा है कि लोगों की संख्या बढ़ रही है और प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपलब्ध स्थान कम होता जा रहा है, बल्कि यह इसलिए भी बढ़ रहा है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की मांगें लगातार बढ़ती जा रही है जिससे वे अधिक व्यर्थ पदार्थों को वातावरण में फेंकने लगे हैं।

प्रदूषण के प्रकार

उडम् (1971) ने पारिस्थितिक तन्त्रों के आधार पर दो मौलिक प्रकार के प्रदूषणों की पहचान की है:

- **अनिम्नीकरण प्रदूषक (Non-degradable Pollutants):** वे पदार्थ तथा विष जो प्राकृतिक पर्यावरण में या तो निम्नीकृत नहीं होते हैं अथवा बहुत ही धीमी गति से निम्नीकृत होते हैं, जैसे एल्यूमीनियम, पारदीप लवण (Mercurial salts), लम्बी श्रृंखला वाले फीनोलिक रसायन (डी0डी0टी0–डाइक्लोरो डाइफिनाइल ट्राइक्लोरोईथेन, बी एच सी–वेन्जीन हैक्साक्लोराइड) बेकार प्लास्टिक की बोतलें, पोलीथिन की थैलियाँ, शीतल पेयों के टिन आदि। ये संचित होते रहते हैं। साथ ही ये जैविक रूप से आवाद्धित (magnified) होते जाते हैं अर्थात् ये एक जैविक तन्त्र से सूदरे में चले जाते हैं ये पारिस्थितिक तन्त्र में प्राकृतिक रूप से पुनर्चक्रित (recycled) नहीं होते हैं।
- **जैव–निम्नीकरणीय प्रदूषक (Biodegradable Pollutants):** ये घरेलू व्यर्थ पदार्थ होते हैं जो आसानी से प्राकृतिक प्रक्रिया के अन्तर्गत अपघटित हो जाते हैं। उदाहरण के लिए घरेलू वाहित जल (sewage), ताप अथवा उष्मा प्रदूषण आदि।